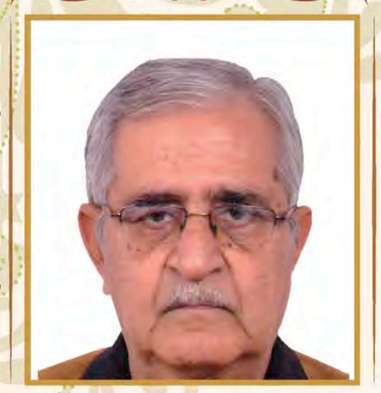

श्री जवाहरलाल कौल

Shri Jawahar Lal Kaul



पद्म श्री

Padma Shri



राष्ट्रपति से अलंकरण प्राप्त करते हुए

Receiving the decoration from the President

श्री जवाहरलाल कौल

श्री जवाहरलाल कौल, जम्मू एवं कश्मीर अध्ययन केन्द्र, नई दिल्ली के अध्यक्ष हैं। आप एक प्रख्यात हिन्दी पत्रकार हैं तथा आपको अपने सकारात्मक रवैये और स्पष्ट विचारों के लिए जाना जाता है। आप पत्रकारों के उस समूह से आते हैं, जिन्होंने भाषा की स्पष्टता के साथ–साथ स्थल से रिपोर्टिंग करने की दोनों विधाओं के साथ हिन्दी पत्रकारिता के नए युग का आगाज किया। विभिन्न मुद्दों पर पचास वर्ष से भी ज्यादा समय से अपने लेखन अनुभव के साथ ही आप कई एक सामाजिक–आर्थिक संगठनों से भी संबद्ध हैं।

2. आपका जन्म 26 अगस्त 1937 को जम्मू एवं कश्मीर के उत्तर पश्चिम भाग (जो अब पाकिस्तान के कब्जे में है) के एक सुदूर कस्बे स्कारडू में हुआ था। आपने मुजफ्फराबाद (अब पाकिस्तान में) स्थित स्कूल में दाखिला लिया और प्राथमिक शिक्षा लेह (लद्दाख) से उत्तीर्ण की। भारत के विभाजन के बाद आप अपने माता–पिता के साथ श्रीनगर में एक विस्थापित व्यक्ति के रूप में रहे। जीवन के कठिन दौर से गुजरते हुए आपने अध्ययन जारी रखा और कश्मीर विश्वविद्यालय से परास्नातक की उपाधि अर्जित की। आपने 1964 में एक प्रशिक्षु पत्रकार के रूप में औपचारिक रूप से पत्रकारिता के क्षेत्र में कदम रखा। अगले ही वर्ष आपको मशहूर हिन्दी लेखक एवं कवि एस एच वात्सायन ने द टाइम्स ऑफ इंडिया ग्रुप द्वारा प्रकाशित अपनी हिन्दी समाचार पत्रिका दिनमान के लिए अपनी टीम में चुन लिया। दिनमान से जुड़ने के कारण आपको प्रत्येक राज्य का भ्रमण करने और देश तथा देश के लोगों के बारे में प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्त करने का अवसर मिला। दिनमान की वसीयत को आगे तब और एक पायदान मिला जब आपने सहायक सम्पादक के रूप में जनसत्ता दैनिक में कार्यभार संभाला और आपको सम्पादकीय पृष्ठ की देखभाल का दायित्व सौंपा गया। अपने लंबे पत्रकारिता करिॅअर में आपने छात्र आंदोलनों की भरमार देखी, जिसने राजनीतिक परिदृश्य को अत्याधिक रूप से प्रभावित किया। आपने रामजन्म भूमि और मंडल आंदोलनों को विस्तारपूर्वक कवर किया।

3. दिन–प्रतिदिन की राजनीतिक घटनाओं से राहत के रूप में आपको कुछ समय अपना ध्यान सामाजिक आर्थिक विचारधारा की अपेक्षाकृत गहरी और दीर्घकालिक बीमारियों पर लगाने के लिए प्राप्त हुआ। छत्तीसगढ़ का विनाशकारी दुर्भिक्ष, मध्य प्रदेश तथा उत्तर प्रदेश के सीमावर्ती क्षेत्रों में डकैतों का आतंक और इसके साथ ही वनों का विनष्टीकरण और नदियों को नुकसान इस आर्थिक बीमारी के कुछ आयाम थे। इन हतोत्साही स्थितियों में आपको रिपोर्ट करने हेतु कुछ सकारात्मक विषय वस्तु प्राप्त हुई। आपने स्वयं को चिपको आंदोलन से जोड़ा और हिमालय की घाटियों के उत्तुंग स्थलों से नियमित रूप से रिपोर्टिंग जारी रखी, विनोबा भावे के भूदान आंदोलन की प्रगति पर नजर रखी और चम्बल, भिण्ड तथा मुरैना के डकैतों की "घर वापसी" की भी रिपोर्टिंग की।

4. आपने विज्ञान एवं पर्यावरण केन्द्र से प्राप्त अल्प छात्रवृत्ति के तहत उन क्षेत्रों की पारिस्थितिकी दशाओं पर स्टेटस रिपोर्टें तैयार की, जहां से, गढ़वाल और कुमायूं क्षेत्र में भारत–तिब्बत सीमा पर गंगा नदी में इसकी सहायक नदियां मिलती हैं। बिड़ला फाउण्डेशन की फेलोशिप के तहत् आपने वैश्वीकरण के सन्मुख विशेषकर हिन्दी पत्रकारिता के सापेक्ष, भारतीय पत्रकारिता का गहरा अध्ययन संचालित किया। वर्ष 2000 में आपकी 'हिन्दी पत्रकारिता का बाजार भाव' शीर्षक से लिखी पुस्तक का विमोचन किया गया था।

5. आपको वर्ष 2015 के भानुप्रताप शुक्ल पुरस्कार से नवाजा गया जो उसी वर्ष के दौरान आपके सराहनीय कार्य के लिए प्रदान किया गया। इसका गठन राष्ट्र धर्म प्रकाशन समूह, लखनऊ द्वारा किया गया था।

Shri Jawahar Lal Kaul

Shri Jawahar Lal Kaul, Chairman of Jammu & Kashmir Study Centre, New Delhi is a renowned Hindi Journalist, well known for his positive attitude and forthright views. He belongs to the group of journalists which ushered a new era Hindi journalism, both in form of clarity of language, as well the reporting from the ground. With an experience of more than half a century of writing on a variety of issues he is also associated with several socio economic organizations.

2. Born on 26th August, 1937 in Skardu, a remote town in north western part of Jammu & Kashmir (now held by Pakistan), Shri Kaul joined school in Muzaffrabad (now Pakistan held) and passed Primary school from Leh (Ladhakh). After the partition of India he, along with parents had to live as a displaced persons in Srinagar. Wading through difficult times he managed to study and got his masters degree from Kashmir University. He formally joined journalism in 1964 as a trainee journalist. Next year he was selected by the famous Hindi writer and poet SH Vatsyayana in his team for his Hindi news Magazine Dinaman, published by The Times of India Group. Dinaman enabled him to travel through every state and to gain firsthand knowledge of the country and the people. The legacy of Dinaman was carried forward when he joined Jansatta daily as assistant editor and was made responsible for looking after the editorial page. In his long journalistic career he watched the growth of the student movements, which greatly influenced the political scene. He extensively covered the Ramjanm Bhumi and the Mandal movements.

3. As relief from the day to day political events Shri Kaul found time to devote his attention to more deeper and long term ailments of our socio-economic thinking. Devastating famine of Chhattisgarh, menace of dacoits in areas bordering Madhya Pradesh and UP, as well as the destruction of forests and damage to the rivers were some of dimensions of this economic ailment. In these discouraging situations he found some positive developments to report. He associated himself with the Chipko movement and reported regularly from the high altitude valleys of Himalayas, watched the progress of Bhudan movement of Vinobha Bhave and also reported the 'Home Coming' of dacoits of Chambal, Bhindh and Morena.

4. Shri Kaul, under a short fellowship from Centre for Science and Environment, wrote a status report on ecological conditions of areas from which the river Ganga gets its tributaries along the Indo Tibetan border in Garhwal and Kumaun region. Under the fellowship of Birla Foundation he conducted an in depth study of Indian Journalism in the face of Globalization, especially in relation with the Hindi journalism. The book Titled — Hindi Patrikarta Ka Bhazar Bhav was released in 2000.

5. Shri Kaul received the Bhanupratap Shukla Prize for 2015, a prize for meritorious work during the year, which was constituted by a Rashtra Dharm Group of Publications, Lucknow.